भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास
(डॉ. प्रभा खेतान के संदर्भ में)

डॉ.मा.ना.गायकवाड
हिंदी विभाग
कै.व्यंकटराव देशमूख महाविद्यालय बाभळगाव

प्रास्तवना :

भूमंडलीकरण के इस युग में सृजनात्मक साहित्य पर आज अलग ढंग से सोचने की आवश्यकता है। भूमंडलीकरण के इस तेज प्रवाह में उसकी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्थिति बदल गयी है और कई नये सवाल पैदा हो रहे है। भूमंडलीकरण और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने भारत में प्रवेश करके देश की भाषा संस्कृति और साहित्य तथा राष्ट्रीय भावना को निरस्थ करने की भूमिका निभायी है। प्रगति की दौड में मानो लोग निर्धास्त होकर दौड रहे है। समाज अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी संस्कृति तथा पाश्चात्य वातावरण में इस कदर आ रहे है कि, अपने ही नाम को अशुध्द लिखने–बोलने की उसे सुध नही रही है। ऐसी स्थिति में भी हम आशा कर सकते है कि,हिंदी और हिंदी साहित्य का भविष्य उज्वल है। लेकिन हिंदी साहित्य और उपन्यासों पर किस पर का प्रभाव पड रहा है यह देखना जरुरी है।

आधार शब्द :

भूमंडलीकरण, सृजनात्मक साहित्य, अंतरराष्ट्रीय बदल, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, संस्कृति, राष्ट्रीय भावना, पाश्चात्य संस्कृति, पुरूष सत्ता, आत्मनिर्भर नैतिक, अनैतिक,

डॉ. प्रभा खेतान का जन्म ०१ नवम्बर १९४२ में एक मारवाडी परिवार में हुआ था। प्रभाजी अपने माता पिता की पाँचवी संतान थी। मारवाडी पारम्पकि समाज में जहाँ लडकी का जन्म मनहूस माना जाता है। माता पिता को बेटा होने की अपेक्षा थी,लेकिन बेटी हुई। सभी नाराज हो गये थे। इसीलिए शायद प्रभाजी अपने माँ के प्यार से दूर रही। उम्र के साथ उनकी परिसीमा बढती गई। समाज में स्त्री का जो स्थान था उसके बारे में सोचने लगी। सनातन प्रथाएँ, घुंघट, दहेज, नारी शोषन, नारी को केवल भोग्या समझना यही सारी बातों के प्रति घृणा की भावना निर्माण हो गयी। इसीलिए उन्होंने अस्तित्व का आंरभ किया। अपने प्रिय मित्र जार्ज सर्राफ की सहायता से वे 'ब्युटी थेरपी' का कोर्स करने के लिए लॉसऐंजीलस गई। यही उनके साहित्य ने नया मोड लिया। डॉ. प्रभा खेतान के साहित्य पर पाश्चात्य संस्कृति का और भूमंडलीकरण का भारी प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कविताएँ, निबंध, कहानियाँ और उपन्यास आदि भी पर भूमंडलीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। फ्रेंच लेखिका द. बोडवार की की 'द सेंकड सेक्स' का हिंदी अनुवाद डॉ. प्रभा खेतान ने किया। डॉ. प्रभाजी, सिमोन से अत्याधिक प्रभावित हुई थी। साथ ही अनेक लेखकों से भी प्रभावित थी। 'मुक्ति कामना की दस वार्ता' इस निंबध में डॉ.प्रभा खेतान ने कुछ बिंदुओं का स्पष्टीकरण किया है। जिसमें मुख्य बिंदु है, 'आधी दूनिया का श्रम और भूमंडलीकरण' इस बिंदू तहत वे कहती है, "आज अधिकतर व्यापारिक प्रतिष्ठानों में नीचे के सारे काम लडकियाँ करती है, मगर बॉस पुरूष ही रहता है। किसे दोष दिया जाए ? दुनिया घुमते हुए मैने पाया औरत के काम के घंटे, पुरूष की तुलना में ज्यादा है, दुनिया में दो–तिहाई काम औरते करती है, लेकिन दुनिया की सबसे गरीब कौम औरत ही है।"[१] प्रभाजी पुरूष सत्ता के विरोध में है। भूमंडलीकरण के इस युग में स्त्री के श्रम अधिक है।

भूमंडलीकरण स्त्री के ही श्रम पर अपना संतुलन निर्धारित करता है। अत: डॉ.प्रभाजी ने स्थापित किया है कि, भूमंडलीकरण के परिवर्तन प्रभावो को निरष कर देते है। और उसका इस्तेमाल स्त्री सत्ता व महत्ता के विरूध्द कहलेते है। किसी को अच्छा बूरा कहने का अधिकार पुरूषों को ही किसने दिया ? किसी रचना की आलोचना करना भी पुरूषों को ही किसने हक्क दिया है ? ऐसे अनेक सारे प्रश्न वह पाठकों को पुछ ना चाहती है। जैसे अनेक पुरूष लेखक लिख सकते है। उस कृ–ति को दया की दृष्टि से देखा जाता है। इतनाही नही आलोचक भी दया की दृष्टि से देखते है। यह डॉ. प्रभा को कतई मान्य नही है। प्रभाजी के अनुसार पुरूष का अपना नेटवर्क होता है। जिसकी बदौलत वह स्त्री को प्रोग्रामिंग करता है। उसका संचलन करता है। निर्णायक मंडल में कितनी स्त्रियाँ होती है। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह भी है कि, स्त्री ने भी स्वयं कोई बडे जोखिम नही उठाए। डॉ. प्रभाजी का कहना है कि, स्त्री को आज अपनी देह के प्रति नया दृष्टिकोन निर्धारित करना होगा। स्त्री अपने देह के संसाधन का महत्व पहचाने इसी दैहिकता के आधार पर वह प्रकृति के इतने करीब है उसमें अंतर्ज्ञान की क्षमता है।

डॉ.प्रभा खेतान के उपन्यास भी पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। उनका १९११में प्रकाशित उपन्यास ' आओ पेपे घर चले' यह अमेरिकी नारी के जीवन के वास्तविकता को प्रस्तुत करनेवाला है। यह उपन्यास अमेरिकी एकाकी जीवन शैली और संवेदनशीलता का जीवंत चित्रण है। अमेरिकी मानसिकता स्वतंत्र आर्थिक जीवन शैली की है। जहाँ आर्थिक स्वतंत्रता होती है वहाँ संवेदनहिनता अधिक मात्रा में सक्रीय होती है। उपन्यास में ७० वर्षीय आइलिन दो पतियों और पाँच प्रमियों को याद करती कुत्ता पेपे को बेटा मानकर जीवन के दुखो को भूलना चाहती है। आदमी में जानवर और जानवन में आदमी को देखती हुई स्वयं को प्यार करती है। भारतीय संस्कृति के अनुसार यह लज्जास्पद बात है। किसी को दो पति और पाँच प्रमि हो, यह खुली अर्थव्यवस्था का परिणाम है। भूंमडलीकरण में इसे स्वीकार करना पडता है। भूमंडलीकरण के कारण ही आइलिन को आर्थिक स्वतंत्रता मिली और वह दो पति,पाँच प्रेमि कर बैठी। उसकी अपनी पहचान कुछ नही रही लेकिन उसके अकेले का जीवन मात्र मजे मे गुजर गया। मनचाहा जीवन गुजारना यह मानवी जीवन का उद्देश्य नही है। एक ओर स्वतंत्रता की आस है तो दूसरी ओर भूमंडलीकरण के कारण अकेलेपन का अहसास भी है। विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह उपन्यास वैश्वीकस्तर पर नारी के जीवन के भयावह सत्य को उजागर करता है। यह उपन्यास बार–बार पाठक के सामने प्रश्न उपस्थित करता है कि, दो पति और पाँच प्रेमियों को छोडकर कुत्ते के साथ दिन गुजारना क्या इस प्रकार की स्त्री–मुक्ति हो सकती है। डॉ. प्रभा खेतान का दूसरा उपन्यास है, 'तालाबंदी'। उपन्यास का नायक श्याम बाबू धनोपार्जन करने के लिए व्यापार की शुरुआत करते है। धीरे–धीरे उनका व्यापार बढता ही जाता है। जैसे–जैसे उनका व्यापार बढता है, वैसे–वैसे वह अपने परिवार से दूर हो जाता है। जिनके लिए सुख खरिदने की जिंदगी भर कोशिश करता है। उन्हें पैसे के चक्कर में दूर–दूर कर देता है। उनकी बहन का बेटा पैसे के लिए जी हुजुरी करता है। पत्नी अपने पति के साथ दो पल बीताने के लिए तरसती है। अत: यह नायिका भी भूमंडलीकरण का शिकार हो गई। भूमंडलीकरण में भौतिक सुख सुविधा मिलेगी लेकिन पारिवारिक आनंद नही मिलेगा। भूमंडलीकरण और इंटरनेट के कारण पूरा विश्व अपनी मुठ्ठी में आया और मुठ्ठी में जो परिवार था वह हमारी मुठ्ठी से सटक गया। नारी विमर्श और भूमंडलीकरण यह एक साथ नही रहे सकते। भूमंडलीकरण की स्वतंत्रता परिवार के विरोध में काम करती है। भूमंडलीकरण में भी नारी का वही का वही हाल रह गया है।

डॉ.प्रभा खेतान का तीसरा उपन्यास है 'छिन्नमस्ता'। उनका यह उपन्यास सर्वाधिक चर्चित रहा है। अनेक विव्द्वानोने इस उपन्यास को प्रभाजी की आपबीती भी कही है। उपन्यास की नायिका

प्रिया बचपन से ही दुत्कार और फटकार की पीडा को झेलती हुई बडी होती है। "कुलीन परिवारों में औरतों की सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्थिति के मकडजाल को चीरफाड कर देखने, समझने, सुधरणे, सुलझाने, की मंगलाकांक्षा में किया गया यह गंभीर समाजशास्त्रीय अध्ययन है।" [२] नौ वर्ष की उम्र में पिता के स्वर्गवास होने तथा बडे भाई की वासना का शिकार बनने से वह लगातार सहमी–डरी सी रहने लगती है। लेकिन समय–समय के साथ उसका साहस, शोषक शक्तियों के लिए चुनौती बन गई। पति भी उसे भोग्या समझता है और उसे उसे औरत पन से चिढ निर्माण होती है। माँ बनने के बाद भी उसमें कोई परिवर्तन नही आता। वह अपने संसार के प्रति विद्रोह कर बैठती है और परिवार टूट जाता है। मस्ती में रहनेवाली प्रिया अपने ही जीवन के साथ संघर्ष शुरु करती है। भूमंडलीकरण की स्वायत्तता से नारी विमर्श के नाम पर स्त्री जगत कहां जा रहा है इसका भी ध्यान देना जरूरी होता है। जिस उद्देश्य से परिवार को छोड दिया जाता है, वह उद्देश्य तो कभी सफल नही हो पाता है। क्या यह भूमंडलीकरण और खुले बाजारवाद के कारण हो रहा है ? यह प्रश्न निरूत्तर ही रहता है। जो नारी जाग उठती है। वही अपने अस्तित्व को खोजने में निकल पडती है। "अभिजात्य स्त्रियों को चाहे घर में कार्य न होने पर निष्क्रिय रहना सुख की स्थिति समझी जाती है इसी कारण बहतेरी स्त्रियाँ गतिहीनता निष्क्रियता घरेलु शोषण को ही परम सुख की अवस्था समझती है।" [०३] घरमें काम करनेवाली भारतीय नारी अपने परिवार को सब कुछ मानती है। यह सब कुछ मानना क्या शोषण है ? शोषण तो उसका भी होता है, मुक्त अवस्था में जीवन जीती है। भूमंडलीकरण में नारी अपनी मुक्तता को किस प्रकार लेती है, उसपर उसकी स्वतंत्रता निर्भर करती है।

डॉ.प्रभा खेतान का उपन्यास 'पीलीआंधी' सामाजिक विवाह संस्था एवं परिवार पर एक प्रश्नचिन्ह अंकित करता हें। उपन्यास की नायिका अपनी अस्मिता की पहचान एवं धन कमाने के लिए घर से निकलती है। आर्थिक स्वतंत्रता उसके जीवन की पहली शर्त है। शिक्षित महिलाओं के भविष्य का सपना है पीलीआंधी उपन्यास। उपन्यास की एक बाजू यह भी है कि, उपन्यास की नायिका जितना महत्व आर्थिक स्वतंत्रता को देती है,उतना ही महत्व मातृत्व को भी देती है। अपितु उससे कही अधिक, वे मातृत्व के लिए अर्थ को छोड सकती है। मातृत्व तो चाहिए लेकिन विवाह संस्था पर प्रश्न चिन्ह उठाती है। विवाह के बिना मातृत्व ग्रहण करना यह ता समाज के विपरित है। ऐसी संतान को समाज मान्यता नही देता। उपन्यास की नायिका खुले बाजारवाद की तरह अपने पति को सहजता से छोडकर उसका प्रेमी सुजीत के पास जाकर खुले आम रहने लगती है। उससे बच्चा भी हो जाता है। फिर भी उसके मन में समाज का डर नही। पाश्चात्य संस्कृति का वहन करनेवाली सोमा की यह विचारधारा है। यह विचारधारा भूमंडलीकरण से आई हुई है। भूमंडलीकरण में जैसे केवल मुनाफा देखा जाता है, वैसे ही नायिका सोमा नैतिक – अनैतिक और वैध–अवैध की उलझन में नही पडती वह अपना स्वार्थ देखती है। भारतीय विवाह संस्था को नकारना तथा चित्रा के साथ संबंध जोडना यह पाश्चात्य संस्कृति है। जो भूमंडलीकरण के कारण भारतीय लोग ग्रहण कर रहे है।

'अपने–अपने चेहरे' यह प्रभाजी का उपन्यास उनके अत्यंत नजदीक माना जाता है। उपन्यास की नायिका रमा विवाह, पति, बच्चे आदि से अलग रहकर अपना अस्तित्व खोजने का प्रयास करती है। स्त्री अस्तित्व और पहचान अलग ढूंढने का प्रयास करती है। रमा सोचती है कि, "वह प्यार तो एक बार करती है। बस हर बार एक ही पुरूष से। कभी शादी के बाद कभी शादी के पहले उसके बाद तो वह अपने आपको झेलना सीखाती है।" [०४] रमा एक विवाहित पुरूष मिस्टर गोयंका से प्यार करती है। लेकिन दूसरी औरत को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। स्त्री की पुरूष के साथ दोस्ती समाज में स्वीकार्य नही है। पहली पत्नि भले ही अपने पति का प्यार न पाए लेकिन मांग में उसके नाम का

सिंदूर भरकर समाज में उँची गर्दन कर के घुम सकती है। तो दूसरी पत्नि उँची गर्दन करके घुम नही सकती। पूरी कथा में रमा की पीडा, उसका अंतर्व्दव्द उसे बार–बार रूलाता है। उसी प्रकार रमा के समानांतर रीतू दूसरी औरत का विरोध करती है, लेकिन देर होने पर उन यातनाओं से पल्ला झाडकर वह मुक्ति का मार्ग अपनाती है। नारी मुक्ति ने भले ही नारी को मुक्तता का नारा दिया हो लेकिन, इस मुक्तता ने परिवार को शाप भी दिया है। भूमंडलीकरण में व्यापार जिस प्रकार होता है, उसी प्रकार रिश्तों का भी व्यापार होता दिखाई देता है। संयुक्त परिवार नाम की संकल्पना लुप्त होती जा रही है। उपन्यास की नायिका भी भूमंडलीकरण से प्रभावित है।

'अग्नि संभवा' उपन्यास की नायिका आइ. वी.चीनी महिला है। जिसे उसे अपने देश से अटूट प्रेम है। आइ.वी.की कहानी के साथ चीनी, क्रांति, मार्क्सवाद, गोरीजाति का शोषण और राजनीतिक घटनाओं का वर्णन भी किया है। उसके अंदर भी लेखिका ने विद्रोह भर दिया है। आइ.वी. अपने बॉस शिव के बेटे को गोद ले लेती है। बडबोली आइ. वी. महत्वकांक्षी नारी है, मेहनती है, सिलाई–कढाई करती है। बाद में टॅक्सी ड्रायव्हर बनती है। हाँगकाँग छुपकर जाती है। लेखिका ने वैश्विक धरातल पर स्त्री के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। वे बताना चाहती है कि, स्त्री में एक दैवी शक्ति होती है। यदि वह कुछ करने की ठान ले तो वह चाहे मारवाडी पारम्पारिक स्त्री हो या चीन की मामुली किसान की बेटी सफलता के पश्चात ही लहरा सकती है।

डॉ.प्रभा खेतान का अंतिम उपन्यास 'स्त्री पक्ष' है। आलोचना मानते है कि, प्रभाजी की यह सबसे कमजोर रचना है। स्त्री स्वतंत्रता के नाम पर नायिका क्या चाहती है ? इसे स्पष्ट करने में लेखिका असमर्थ रही है। सामाजिक प्रथा को लेकर अनेक प्रश्न उनके मन में उठते है। नायिका की कॉलेज के पुरूषों के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है। माँ और पिता के कहने पर सुमित नाम के डॉक्टर के साथ उसकी शादी हो जाती है। कुछ दिन ठिक ठाक चलता है लेकिन सुमित स्वभाव से रंगीन मिजाज का होने के कारण यह नायिका वृंदा से तलाक लेता है। वृंदा आत्मचिंतन करती है कि, कहाँ गलती हो गई। कुछ दिनों बाद उसके जिंदगी में आर्जव नाम का पेंटर आता है। वह पेंटर के साथ अपना घर बसाना चाहती है। लेकिन मुंबई में काम मिलने की वजह से वह भी उसे छोडकर मुंबई चला जाता है। डॉ.प्रभा खेतान का छोटा उपन्यास है 'एड्स'. आलोचको ने इसे लंबी कहानी कहा है। एक सफल दाम्पत्य जीवन में पति के मित्र से दोस्तो के फलस्वरूप एड्स की बीमारी पत्नी को लगती है। फिर भी पति माफ कर देता है और रोज उसे मिलने के लिए अस्पताल में जाता है। वैश्विक स्तर पर इस बीमारी से उत्पन्न आपसी संबधों की दरारों का स्पष्टिकरण हो जाता है। पाश्चात्य पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह उपन्यास भारतीय महिला व्यवसायी की व्यवसाय संबंधित समस्याओं को भी साथ–साथ दर्शाता है। अमेरिकी जीवन में दाम्पत्य जीवन टूटने की कगार पर है। इसी का उदाहरण है यह एड्स उपन्यास।

<u>सारांश :</u>

डॉ.प्रभा खेतान की नवीनतम रचनाएँ बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ यह भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्नों की गहरी पडताल करती है। प्रभाजी ने भूमंडलीकरण और उसके आर्थिक पहलुओं के नारी जीवन पर पडनेवाले परिणाम की चर्चा की है। परिवर्तन और भूमंडलीय प्रक्रियोंओं के कारण स्त्री जीवन की नई भूमिकाओं से गुजरना पड रहा है। इसका परिणाम वह स्वयंपूर्ण तो हो गई लेकिन उसे असमानता और असुरक्षा का सामना भी करना पड रहा है। हम आज देख सकते है कि, जैसे–जैसे भूमंडलीकरण अपनी बाँहे फैला रहा है वैसे ही बलात्कार की घटनाएँ बढ़ रही है। भूमंडलीकरण की एक विशेषता यह है कि, जीवन के हर–एक रुप का वस्तुकरण करता है। बाजार में उसकी किंमत निर्धारित होती है। चाहे पुरूष हो स्त्री। प्रभाजी ने साहित्य में अक्सर वही–वही बाते की है जो की पुरूष मित्रता पर आकर टिक जाती है। वह मानती है

कि, जिस प्रकार पुरूष मित्रता कर सकते है वैसे स्त्री क्यों नही कर सकती ? समाज इतना विस्तारित बुध्दिवाला नही की एक महिला की किसी पुरूष के साथ दोस्ती स्वीकार कर ले। किसी की मित्रता के लिए या स्वतंत्रता के लिए अपने घर परिवार को छोड देना ये कैसी नारी चेतना है। विवाह संस्था का विरोध कर फिर दूबारा विवाह की जरूरत क्यों ? अत: लेखिका क्या चाहती है यह अधुरा ही रह जाता है। दुनिया की हर संस्कृति भूमंडलीकरण पर सवाल उठाती हुई नजर आ रही है। मगर भूमंडलीकरण से प्रभावित भी हो जाती है। भूमंडलीकरण अपनाना आज की आवश्यकता भले ही हो, लेकिन साथ ही हमारी संस्कृति का हनन भी है। भूमंडलीकरण स्वीकारना है तो उसे सीमित मात्रा में और अपना विवके जागृत कर स्वीकारना चाहिए। भावनाओं में बहकर भूमंडलीकरण को अपनाते है तो यह निश्चित रुप से हमारा प्रस्थान पाश्चात्य संस्कृति की ओर हो रहा है इसमें दूमत नही है।

संदर्भ :

१) डॉ.प्रभा खेतान : उपनिवेश में स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ। पृष्ठ २२।
२) अरविंद जैन : औरत, अस्तित्व और अस्मिता पृष्ठ ६५।
३) डॉ.मुक्ता त्यागी : समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी विमर्श पृष्ठ १५९।
४) डॉ.प्रभा खेतान : छिन्नमस्ता, सरस्वती विहार दिल्ली प्रथम सं. १९९४।
५) डॉ.प्रभा खेतान : अग्नि संभव, हंस पत्रिका मार्च १९९२ से मई १९९२।
६) डॉ.प्रभा खेतान : पीली आंधी, राजकमल प्रकाशन १९९५।
७) डॉ.प्रभा खेतान : अपने–अपने चेहरे, राजकमल प्रकाशन १९९५।
८) डॉ.प्रभा खेतान : बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ वाणी प्रकाशन २००४।
९) डॉ.प्रभा खेतान : क्षमा शर्मा : स्त्रीवादी विमर्श, समाज और साहित्य।
१०) डॉ.धनंजय शर्मा : आज की हिंदी कहानी।
११) डॉ.मधुसिंधु : महिला उपन्यासकार।
१२) बाबू गुलाबराय : भारतीय संस्कृति की रूपरेखा।
१३) कमला प्रसाद : स्त्री मुक्ति का सपना संपादक – राजेंद्र शर्मा वाणी प्र.दिल्ली।
१४) नासिरा शर्मा : औरत के लिए औरत, सामायिक प्रकाशन नई दिल्ली।